कश्मीर में क़ाज़ीगुण्ड-अनंतनाग रेलवे लाइन के उद्घाटन के मौके पर वज़ीर-ए-आज़म की तक़रीर

अनंतनाग
(28.10.09)

मुझे खुशी है कि इस खूबसूरत मौसम में, मुझे वादी-ए-कश्मीर में आने का मौका मिला है। कुछ ही दिनों में, हम इस मौसम के सुनहरे रंगों और आतिश-ए-चिनार का नज़ारा भी देख सकेंगे।

आज मैं क़ाज़ीगुण्ड-अनंतनाग रेलवे लाइन की शुरुआत करने के लिए यहाँ आया हूँ। मैं भारतीय रेलवे और कश्मीर के अवाम को इस कामयाबी के लिए मुबारकवाद देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि वह दिन दूर नहीं, जब रेलगाड़ियाँ बानिहाल दर्रे से होकर जम्मू से श्रीनगर तक चलने लगेंगी।

भाइयों और बहनों,

पिछ्ली मर्तबा जब मैं जम्मू-कश्मीर आया था तब रियासती चुनाव होने वाले थे। उसके बाद लोकसभा चुनाव भी हुए। मुझे खुशी है कि जम्मू-कश्मीर के अवाम ने दोनों चुनावों में बड़ी तादाद में हिस्सा लिया। मेरा मानना है कि आपने अपना वोट एक बेहतर कल के लिए पुर-अमन रास्ते खोलने के लिए दिया। मैं कश्मीर के आम आदमी की सूझबूझ और खुलूस की तारीफ करता हूँ। अब चुनी हुई सरकार के पास अमन-चैन को मुस्तहकम बनाने का एक सुनहरा मौका है।

पिछ्ले पाँच सालों के दौरान भारत सरकार ने जम्मू-कश्मीर रियासत में तरक्की लाने के लिए कई कदम उठाए हैं। हमने इस इलाके के लोगों के रिवायती रिश्तों को दोबारा ज़िन्दा करने की कोशिश की है। हमने श्रीनगर-मुज़फ़्फ़राबाद सड़क और पुंछ-रवालकोट सड़क पर लाइन ऑफ कंट्रोल के आर-पार साज़ो-सामान और आने-जाने का रास्ता खोलने का जुर्रतमंदाना कदम उठाया है। इसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए मरक़ज़ी सरकार ने हेरिटेज-मुगल रोड बनाने के लिए 385 करोड़ रुपये देने का फैसला किया है। यह सड़क शोपियान को पुंछ और राजौरी के दूरदराज इलाकों से जोड़ देगी।

मरकजी सरकार ने पिछ्ले पाँच सालों में रियासत की तरक्की के लिए बड़े पैमाने पर रकम भी मुहैया कराई है। पर मुझे यह भी मालूम है कि इस रकम का फायदा आम आदमी तक पूरी तरह नहीं पहुँच पाया है। हम इस सूरते हाल को बदलना चाहते हैं। हम

रियासत में तरक्की के अमल को तेज़ करना चाहते हैं। Brain-drain की वजह से रियासत के बहुत सारे टीचर्स, डॉक्टर्स, इंजीनियर्स और दानिशवर हज़रात, रियासत से बाहर चले गए हैं। हमें ऐसे हालात कायम करने हैं जिससे ऐसे लोग रियासत में वापस आकर जम्मू-कश्मीर में बदलाव और तरक्की का ज़रिया बन सकें। हम रियासती सरकार के हाथों को मज़बूत करना चाहते हैं ताकि तमाम मंसूबों को अमलीजामा पहनाया जा सके।

यहाँ मैं यह भी अर्ज़ करना चाहूँगा कि अब समय आ गया है कि मक़ामी इदारों के लिए चुनाव तेज़ी से मुकम्मल हों। इससे तरक्की के अमल में आम लोगों की शिरकत को बढ़ावा मिलेगा।

भाइयों और बहनों,

मैं जम्मू-कश्मीर के नौजवानों से अपील करता हूँ कि वे एक नई रियासत की तामीर में हमारा हाथ बटाएं। मुझे उनकी मायूसियों का अहसास है। लेकिन हालात बदल रहे हैं। मैं उनसे दरख्वास्त करता हूँ कि वे खुले दिलो-दिमाग से यह सोचें कि वे अपना मुस्तक़बिल किस तरह बेहतर बना सकते हैं।

मेरा आपसे वादा है कि मरकजी हुकूमत अपनी तरफ से रियासत के नौज़वानों को तामीरी कामों में लगाने की पूरी कोशिश करेगी। Tourism Ministry में "हुनर से रोज़गार तक" प्रोग्राम के तहत हर साल 300 नौजवानों को ट्रेनिंग दी जाएगी ताकि वे रोज़गार हासिल कर सकेंगे। इसके अलावा यही वज़ारत हर साल 200 नौज़वानों को अमरनाथ और वैष्णों देवी यात्रा के कामों में रोज़गार के लिए ट्रेनिंग देगी।

Ministry of Labour भी, ITIs में, 8000 नौजवानों को रोज़गार के लिए Training देगी। एक कौमी प्रोग्राम के हिस्से के तहत Ministry of Youth Affairs जम्मू-कश्मीर के 8000 नौजवानों को Voluntary बुनियादों पर तैनात करेगी। इनसे अवामी खिदमत जैसे डल झील की सफाई के कामों में लगाया जाएगा।

भाइयों और बहनों,

मेरा यह मानना है कि जम्मू-कश्मीर Information Technology के Sector में भारत की किसी भी रियासत जैसी तरक्की कर सकता है। हम इस मैदान में रियासती

हुकूमत की कोशिशों में हर तरह की मदद देंगे। मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि एक मरक़ज़ी प्रोजेक्ट के तहत 600 से ज़्यादा नौज़वानों को अभी हाल ही में ट्रेनिंग देकर Information Technology सेक्टर में रोज़गार दिया गया है।

मुझे यह ऐलान करते हुए भी खुशी हो रही है, कि अब जम्मू-कश्मीर में दो Central Universities खोली जाएंगी। एक जम्मू में और दूसरी कश्मीर में।

भाइयों और बहनों,

कश्मीर की खूबसूरत वादी की शान व शौकत और यहां के लोगों की मेहमान नवाज़ी की रिवायत का कोई जवाब नहीं है। यहाँ की खूबसूरत झीलों और जंगलात ने सदियों से सैलानियों को अपनी तरफ खींचा है। यहाँ लद्दाख के बौद्ध मठ भी हैं, हज़रत बल दरगाह की मुक़द्दस निशानियाँ भी हैं और रघुनाथ मंदिर की पवित्रता भी है। अगर कोशिश की जाए तो कश्मीर दुनिया का बेहतरीन सय्याहती मक़ाम बन सकता है।

भाइयों और बहनों,

हम डल झील को साफ-सुथरा रखने के एक प्रोजेक्ट के लिए रकम देते रहे हैं, लेकिन काम सुस्त रहा है। मैं रियासती सरकार से गुज़ारिश करूँगा कि वह सफाई के Project में तेजी लाने के लिए एक टास्क फोर्स बनाए। मरक़ज़ी सरकार ने इस प्रोजेक्ट के लिए 356 करोड़ रुपये की इज़ाफी रकम देने का फैसला भी किया है। हम रियासती सरकार के साथ वूलर झील और मानसर झील को बचाने और साफ-सुथरा रखने के जारी प्रोजेक्टों में तेज़ी लाने की कोशिश करेंगे।

हुकूमत ग्लेशियरों के पिघलने से फ़िक्रमंद है। मुझे यह ऐलान करते हुए खुशी हो रही है कि हिमालय के माहौलियात की हिफ़ाजत के लिए एक नेशनल मिशन की शुरुआत की जा रही है। हम अमरनाथ धाम जैसे तमाम पाक मकामात का तहफ्फुज करना चाहते हैं।

भाइयों और बहनों,

मेरा मानना है कि कश्मीर में खून-खराबे और दहशतग़र्दी का दौर अब खत्म हो रहा है। आम आदमी अपनी तमाम मुश्किलात को अमन-चैन के माहौल में बातचीत के

ज़रिए सुलझाना चाहता है। मैंने 2004 में, प्रधान मंत्री का ओहदा संभालने पर यह कहा था कि हमारी सरकार हर उस शख़्स से बिला शर्त बातचीत करेगी जो खून-खराबे का रास्ता छोड़ दे। मैंने अलग-अलग groups से बातचीत के लिए कई गोलमेज कांफ्रेंसें भी की हैं। तमाम मामलों पर बातचीत हुई। हमने समाज के हर तबक़े की माँगों को मद्देनजर रखा। हमने इस बातचीत के नतीज़े में बहुत सारे कदम उठाए हैं। मैं आज फिर कहना चाहता हूँ कि हम उन सभी लोगों से बातचीत करने को तैयार हैं, जो कश्मीर में अमन-चैन और तरक्की की बहाली के ख्वाहिशमंद हैं। हम जम्मू-कश्मीर के सियासी और इक़्तेसादी मसायल को हल करने के लिए समाज के तमाम तबकों को अपने साथ लेकर चलना चाहते हैं।

मैंने यह भी कहा था कि पाकिस्तान के साथ मैं तमाम मामलात पर बातचीत करने के लिए तैयार हूँ। मैंने यह बात किसी कमजोरी के तहत नहीं, बल्कि पूरी मज़बूती के साथ कही थी। जम्मू-कश्मीर में दहशतगर्दी और खून खराबे में कमी आने पर हमने 2004-07 के दौरान पाकिस्तान सरकार के साथ कामयाब और मुफीद बातचीत भी की जिसमें दीगर मसायल के अलावा जम्मू-कश्मीर के मसले के मुस्तक़िल हल का पहलू भी शामिल है।

इसी दौरान, साठ बरसों में पहली मर्तबा, अवाम को लाइन ऑफ कंट्रोल के आर-पार सफर करने का मौका मिला। एक-दूसरे से बिछड़े हुए कुनबे सरहद पर फिर से मिल सके। कश्मीर के दोनों तरफ से, कारोबार का सिलसिला शुरू हुआ। दरअसल पाकिस्तान के साथ, हमारी कुल तिजारत 2004-07 के दौरान बढ़कर तीन गुना हो गई। इस मुद्दत के दौरान, हमने पाकिस्तानियों को दुगुनी तादाद में, वीजा जारी किया। एक और रेल राब्ता फिरसे कायम हुआ।

पाकिस्तान के साथ माज़ी में हमारे कशीदा ताल्लुकात को देखते हुए ये कामयाबियां मामूली नहीं कही जा सकतीं। वादी के अन्दर जैसे-जैसे दहशतगर्दी कम हुई, वैसे-वैसे तिजारत और Tourism को बढ़ावा मिला। हम सही सम्त में कदम उठा रहे थे। पहली बार आम लोगों में यह अहसास जागा कि पायदार अमन-चैन जल्द ही कायम हो जाएगा।

लेकिन हमने जो कामयाबियां हासिल की हैं उनको दहशतगर्दी की वजह से बार-बार नुकसान पहुँचा है। दहशदगर्द दोनों मुल्कों के दरम्यान मुस्तकिल दुश्मनी का माहौल बरकरार रखना चाहते हैं। उन्होंने एक अमन पसंद और रवादार मज़हब के नाम का गलत

इस्तेमाल किया है। उनकी सरगर्मियों और उनके नजरियात की हमारे यहाँ कोई जगह नहीं है। ये हमारे अलग-अलग मज़ाहिब के दरम्यान रवादारी और हम-आहंगी की सदियों पुरानी रिवायत के बिल्कुल खिलाफ हैं।

भाइयों और बहनों,

मुझे पूरा यक़ीन है कि पाकिस्तान में अवाम की अक्सरियत भारत और पाकिस्तान के बीच तआवुन और अच्छे ताल्लुकात की तरफदार है। वे पायदार अमन चाहते हैं। हमारा भी नजरिया यही है।

मैं जानता हूँ कि लाइन ऑफ कंट्रोल के दोनों तरफ से लोगों के रिवायती रिश्तों को बहाल करने की कोशिशों को और बेहतर किया जा सकता है। सरहद पर तिजारत की जो सहूलतें दस्तियाब हैं, वे काफी नहीं हैं। बैंकिंग का कोई इंतज़ाम नहीं है। कस्टम की सहूलियात को मज़बूत बनाने की जरूरत है। तिजारती मेले नहीं लगाए जा रहे हैं। जिन चीजों की तिजारत हो रही है उनमें इज़ाफ़ा करना जरूरी है। आने-जाने के लिए मंजूरी हासिल करने में काफी वक्त लगता है। भारत और पाकिस्तान के कैदी, अपनी सजाएं पूरी करने के बाद भी, एक-दूसरे की जेलों में बंद पड़े हैं।

भाइयों और बहनों,

सच्चाई यह है कि ये वे इंसानी मामलात हैं जिनको हल करने के लिए पाकिस्तान के तआवुन की जरूरत है। हम पाकिस्तान सरकार के साथ इस तरह के और दूसरे मामलात पर बातचीत करने के लिए तैयार हैं। इससे हमारे ताजिरों, बिछड़े हुए परिवारों, कैदियों और मुसाफिरों को राहत मिलेगी। मुफीद बातचीत के लिए जरूरी है कि दहशतगर्दी को काबू में लाया जाए।

हम पाकिस्तान सरकार से इसरार करेंगे कि वह उन अनासिर को काबू में करे जो भारत में दहशतगर्दी फैलाते हैं। अगर ये अनासिर गैर सरकारी हैं, तो भी वहाँ की सरकार का फर्ज़ बनता है कि वह ऐसे लोगों के ठिकानों और बुनियादी ढांचों को पूरी तरह खत्म करे। उनको इंसानियत के खिलाफ किए गए उनके जरायम की कड़ी से कड़ी सज़ा भी मिलनी चाहिए।

यह ख्याल ठीक नहीं है कि दहशतगर्दों का इस्तेमाल सियासी मक़सदों के लिए किया जा सकता है। उनकी सोच से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। आख़िरकार, वो दहशतगर्दी का असली चेहरा क्या है, यह अब पाकिस्तान के अवाम ख़ुद अपनी आँखों से देख रहे हैं।

हम उम्मीद करते हैं कि पाकिस्तानी हुक्काम, दहशतगर्द ग्रूपों के खिलाफ, अपनी जारी कार्रवाई को पूरे अंजाम तक पहुंचायेंगे। पाकिस्तानी सरकार को चाहिए कि वह उन सभी दहशतगर्द ग्रुपों का सफाया करे, जो पाकिस्तान के किसी भी हिस्से से, किसी भी मक़सद के लिए, अपनी सरगर्मियाँ चला रहे हैं।

मैं पाकिस्तान के अवाम और पाकिस्तान की सरकार से अपील करता हूँ कि वे सच्चाई और नेक इरादों के साथ हमारा साथ दें। जैसाकि मैंने पहले भी कई बार कहा है कि हम दोस्ताना अंदाज़ में जवाब देने में कोई कमी नहीं आने देंगे। एक शायर ने कहा है:-

कुछ ऐसे भी मंजर हैं, तारीख की नज़रों में।
लम्हों ने खता की थी, सदियों ने सजा पाई।

मेरी पाकिस्तान की सरकार से ये अपील है कि दोस्ती का जो हाथ हमने बढाया है उसको आगे बढ़ाये यही हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जनता के हक में है।

अपनी बात खत्म करने से पहले, मैं आप सब भाई-बहनों का अपनी नेक ख्वाहिशात पहुंचाना चाहता हूँ। मुझे उम्मीद है कि आने वाला वक्त, जम्मू-कश्मीर के अवाम के लिए अमन-चैन, खैरसगाली और तरक्की लेकर आएगा।

जय हिन्द ।

***